जूनागढ़ मुक्ति महोत्सव, जूनागढ़

29 मई, 2016

देश के स्वतन्त्र होने के लगभग तीन महीने बाद जूनागढ़ रियासत स्वतन्त्र हुई थी। इस रियासत की अधिकाश प्रजा हिन्दू थी, पर इसका शासक मुसलमान था। उसका दीवान पाकिस्तान की स्वर्गीया प्रधानमत्री बेनज़ोर मुट्टो का ससुर था। नवाब ने जूनागढ़ की रियासत को पाकिस्तान मे मिलाने की घोषणा कर दी थी। पर जूनागढ़ की देशभक्त प्रजा ने विद्रोह कर दिया और श्यामलदास नाम के एक गाधोवादी व्यक्ति के नेतृत्व मे अस्थायी सरकार की घोषणा कर दी। बाद मे जनमतसग्रह कराकर जूनागढ़ रियासत को भारत मे मिला दिया गया। 9 नवम्बर का दिन जूनागढ़ मुक्ति दिवस के रूम मे मनाया जाता है।

अग्रेजो ने ब्रिटिश भारत को दो हिस्सो मे बाट दिया–भारत और पाकिस्तान। लगभग साढ़ पाच सौ देशी रियासतो को अपने भाग्य का निर्णय स्वय करने की छूट दे गए। ये देशी रियासते इन तीनो मे से कोई विकल्प चुन सकती थी:

- भारत मे विलय
- पाकिस्तान मे विलय
- स्वतन्त्र रहना

सरदार वल्लभभाई पटेल की कुशलता और कूटनीति के फलस्वरूप कुछ रियासतो को छोड़कर शेष भारत मे मिल गई। देश के आज़ाद होने के बाद भी जो रियासते भारत मे मिलने के बारे मे आनाकानी करती रही, वे रियासते थी–जूनागढ़, हैदराबाद और जम्मू–कश्मीर । सरकार पटेल ने अपनी

कुशलता से जूनागढ़ और हैदराबाद को भी भारत मे मिला लिया। जम्मू-कश्मीर का मामला जवाहरलाल नेहरू जी ने अपने हाथ मे ले लिया। यद्यपि बाद मे जम्मू-कश्मीर रियासत के राजा हरीसिह ने जम्मू-कश्मीर रियासत को भारत मे मिलाने की घोषणा कर दी, पर तबतक तब पाकिस्तान कश्मीर पर हमला कर चुका था और उसने कश्मीर का कुछ हिस्सा हथिया लिया था। पाकिस्तान जम्मू-कश्मीर पर अपना अधिकार जताता आया है। जम्मू-कश्मीर का सवाल अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के दलदल मे फसा हुआ ह।मैने वी०पी० मेनन की The story of the Integration of the Indian States पुस्तक पढ़ो थी। इस पुस्तक मे श्री वी०पी० मेनन ने जूनागढ़ के भारत मे विलय के घटनाक्रम का बहुत ही रोचक वर्णन किया है। जूनागढ़ का उस समय का नवाब कुत्तो का बहुत शौकीन था। वह कुत्तो का विवाह भी रचाता था और एसे मौके पर दावत का आयोजन किया करता था। उसकी कई बेगमे थी । जब प्रजा के विद्रोह के कारण नवाब पाकिस्तान भागा तो अपने कुत्तो को भी जहाज़ मे भरकर अपने साथ ले गया। जल्दी-जल्दी मे वह अपनी एक बेगम को भूल गया और वह पीछे छूट गई। बाद मे उसे सम्मानपूर्वक पाकिस्तान भेज दिया गया।

जूनागढ़ एतिहासिक शहर है। यह प्रसिद्ध वैष्णवभक्त और कवि नरसी मेहता की कर्मभूमि है। यह क्षेत्र गिरनार जूनागढ़ के नाम से जाना जाता है और केसर आम के लिए प्रसिद्ध है। यहा की गिर गाय गायो मे सर्वश्रेष्ठ जाति की गाय मानी जाती है। यह भगवान

दत्तात्रेय की पावन भूमि है। यह गाधो जी की भी जन्मभूमि है। भगवान शिव का पवित्र सोमनाथ मन्दिर भी इसी क्षेत्र मे स्थित है। यह क्षेत्र प्राचीन एतिहासिक अवशेषो के लिए भी जाना जाता है। यहा के उपरकोट के किले मे बौद्ध स्मारक अभी भी सुरक्षित है। बौद्धो की अडरग्राउन्ड पूजा स्थलिया इसी किले मे मौजूद है। गिरनार की पहाड़िया इस किले से साफ़ दिखाई पड़ती है। एसी मान्यता है कि अश्वत्थामा की आत्मा गिरनार पर्वत के शिखरो पर अभी भी भटकती है। गिरनार मे इतिहास और प्रकृति दोनो के सौन्दर्य का सगम देखा जा सकता है। यहा का किला, महल आदि दर्शनीय स्थल है।

श्री शामलदास गाधो टाउन हाल का सभागार, जहा कार्यक्रम का आयोजन किया गया था, दर्शको और श्रोताओ से खचाखच भरा हुआ था। लोक कलाकारो ने लोकगीतो के हृदयस्पर्शी गायन से वातावरण को रसमय बनाने मे कोई कोरकसर नही छोड़ो थी। दिव्य भास्कर ग्रुप ने कार्यक्रम का आयोजन किया था। जूनागढ़ के इतिहास और प्राकृतिक सौन्दर्य का परिचय कराने के लिए एक डाक्युमेटरी भी दिखाई गई।